राजनीति और मीडिया पर समझ रखने वाले पाठकों के लिये आठवां अध्याय बहुत लाभप्रद है। इसमें चुनाव और मीडिया से जुड़े अन्य देशों के उदाहरण दिए गए हैं। इटली में प्राइवेट और पब्लिक मीडिया के लिए अलग-अलग प्रावधान निर्धारित किए गए हैं। अमेरिका में, ब्लॉगिंग पर कानूनी अंकुश लगाने की बात का उल्लेख 2004 में राष्ट्रपति चुनाव में घटित कुप्रभाव के संदर्भ में किया गया है। कनाडा में राजनीतिक विज्ञापन से जुड़ा एक अलग तरह का क़ानून बनाया गया है। कनेडियन रेडियो टेलिविज़न एंड टेलीकम्यूनिकेशंस ने चुनावों के दौरान पेड पॉलिटिकल विज्ञापनों के लिए अलग समय निर्धारित किया है। रूस, जिंबांब्वे, इंग्लैंड, मिस्र जैसे कई देशों में चुनावों के दौरान मीडिया के नियमन पर कई महत्त्वपूर्ण तथ्य प्रस्तुत किए गए हैं। एक अन्य अध्याय में भारत के कई महत्त्वपूर्ण चुनावों और उस दौरान मीडिया की भूमिका पर कई अहम बिंदुओं की व्याख्या दी गई है। आपातकाल और प्रेस सेंसरशिप के अलावा 1978 का चिकमंगलूर चुनाव और इंदिरा गाँधी की मीडिया कैंपेनिंग पर प्रकाश डाला गया है। इंदिरा हटाओ, देश बचाओ, संपूर्ण क्रांति, मां-माटी-मानुष जैसे कई राजनीतिक नारे यह दर्शाते हैं कि मीडिया के इस्तेमाल से कहीं न कहीं दलों को इसका फ़ायदा मिला है।

यह एक महत्त्वपूर्ण पुस्तक है, क्योंकि 2017 में पूरे देश का ध्यान खींचने वाला उत्तर प्रदेश का चुनाव हुआ, जिसमें भारतीय जनता पार्टी सरकार बनाने में सफल रही। इस चुनाव में भी मीडिया कैंपेनिंग की बड़ी भूमिका थी। सोशल मीडिया का भरसक प्रयोग किया गया था।

अंत में, चुनावी रिपोर्टिंग के दौरान मीडिया की नैतिकता, उसकी ज़िम्मेदारी, तटस्थता, कार्यप्रणाली और उसकी सीमाओं के बारे में विस्तार से व्याख्या इस पुस्तक की प्रमुख विशेषता है। पत्रकारों की सुरक्षा के बारे में भी ध्यान आकर्षित किया गया है। कुल मिलाकर यह पुस्तक मीडिया से जुड़े लोगों के लिए लाभदायक है। इस विषय पर शोध कर रहे छात्रों के लिए भी यह पुस्तक उपयोगी साबित हो सकती है। राजनीति और मीडिया की समझ के लिये, यह पुस्तक महत्त्वपूर्ण है।

प्रभात दीक्षित
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर
जयपुर नेशनल यूनिवर्सिटी, जयपुर
ईमेल: dixitpioneer@gmail.com
हेमंत पांडे
राजस्थान पत्रिका

प्रेम शंकर झा, *डॉन ऑफ द सोलर एज—एन एण्ड टू ग्लोबल वार्मिंग एण्ड टू फीयर [Dawn of the Solar Age—An End to Global Warming and to Fear],* नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस, 2018, पृष्ठ 280, रू 495, आईएसबीएन 978-93-866-0299-2

DOI: 10.1177/2581654318787683

भूमंडलीय ऊष्मीकरण, वर्तमान में विश्व के सम्मुख एक प्रमुख चुनौती है, जिससे जलवायु में असाधारण परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। तापमान में वृद्धि एवं बर्फ़बारी विगत वर्षों के रिकॉर्ड तोड़ रहे हैं। इससे जुड़े हुए कई मुद्दे हैं, जैसे प्राकृतिक संसाधनों का अत्यधिक दोहन, जनसंख्या वृद्धि, जीवाश्म ईंधन

का अंधाधुंध दोहन, समुद्र के जलस्तर में बढ़ोतरी, कार्बनडाईऑक्साइड एवं अन्य विषैली गैसों में वृद्धि, ग्रीन हाउस प्रभाव, वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों का प्रयोग इत्यादि। इनका संबंध किसी देश-विशेष की सीमा से न होकर संपूर्ण जीव एवं सृष्टि से है। इस पुस्तक में उपर्युक्त एवं इससे जुड़े विभिन्न मुद्दों का एक वैज्ञानिक एवं तथ्यात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में कुल 14 अध्याय हैं, जो चार भागों में विभाजित हैं। पहले भाग में तीन, दूसरे में पाँच, तीसरे एवं चौथे भाग में तीन-तीन अध्याय हैं।

पुस्तक में जलवायु परिवर्तन के खतरों एवं उसके निराकरण के उपायों को प्रस्तुत किया गया है। विषय से संबंधित महत्त्वपूर्ण आयोजनों, जैसे सेमीनार और कॉन्फ्रेंस की चर्चा एवं परिणामों के माध्यम से विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। जीवाश्म ईंधन की जगह पवन ऊर्जा, और असीमित सौर ऊर्जा के बारे में गहन व्याख्या की गई है। सृष्टि को बचाने का एकमात्र उपाय सौर उर्जा है, इसके उपयोग द्वारा सृष्टि को बचा सकते हैं।

अध्याय एक में जलवायु विशेषज्ञों की चेतावनी, वर्ष 2016 सबसे ज़्यादा गर्म वर्ष, सर्वाधिक एवं न्यूनतम तापमान, अलनिनों एवं ला निनो का ज़िक्र, समुद्र स्तर में बढ़ोतरी आदि का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है।

अध्याय दो में उल्लेख है कि रोमक्लब एंव मैसाचुसेट्स इन्स्टिट्यूट ऑफ़ टैक्नोलॉजी (MIT) की 1972 की चेतावनी के मुताबिक यदि मानव प्राकृतिक साधनों का दोहन अबाध गति से करता रहेगा तो उत्पादन, खनिज स्रोत प्रयोग, वातावरण प्रदूषण बढ़ता जाएगा, और 21वीं शताब्दी के मध्य तक पूरी व्यवस्था नष्ट हो जाएगी, और अकाल एवं युद्ध बढ़ेंगे। जलवायु परिवर्तन के साथ गैर-नवीकरणीय संसाधनों का अंधाधुंध दोहन मुख्य ख़तरे हैं। 2008 का एक अध्ययन बताता है कि तेल एवं गैस 2040-42 और कोयला 2112 तक ही बचेंगे। विभिन्न देशों के युद्ध भी इन्हीं संसाधनों नियंत्रण के लिए होगा। इसका एक ही उपाय है, सौर ऊर्जा।

अध्याय तीन में राज्य की मध्यस्थता, दिशा-निर्देशोंकी आवश्यक्ता और वैकल्पिक तकनीकों को विकसित करने पर ज़ोर दिया गया है। वैश्विक स्तर पर ऐसे मानक तय किए जाएँ कि कौन सी तकनीक को बढ़ावा दिया जाए।

दूसरे भाग में उल्लेख है कि सौर ऊर्जा एक ऐसा क्षेत्र है, जिसमें विकास के अवसर ज़्यादा हैं, तथा इनकी सफलता की दर भी ज़्यादा है। लेखक ने ऊर्जा स्थानांतरित करने का सामर्थ्य सोलर थर्मल पावर में बताया है, बजाय सोलर फोटोवोल्टेक पावर (SPV) में।

अध्याय पाँच में बताया गया है कि द ग्लोबल अपोलो प्रोग्राम्स में प्रस्ताव रखा था कि भविष्य में होने वाले शोध आर्थिक रूप से व्यवहार्य तकनीकियों को विकसित करें, ताकि जीवाश्म ईंधन का स्थान अक्षय संसाधन ले सकें। इथेनॉल कभी भी जैव ईंधन को शुरू करने का कुशल स्रोत नहीं हो सकता। अध्याय छः में इस विषय पर चर्चा की गई है कि क्या ऐसी कोई तकनीक है जो आने वाले 30-40 वर्षों में तेल एवं प्राकृतिक गैस को जैव ईंधन में बदलने की क्षमता रखती है। अध्याय सात में बायोमास की असीमित क्षमता के बारे में चर्चा की गई है। लेखक का कहना है कि पूरी दुनिया में पर्याप्त मात्रा से भी अधिक बायोमास मौजूद है, जो पूरे विश्व के परिवहन ईंधन की पूर्ति कर सकता है। अध्याय आठ में हाइड्रोजन का जल से उद्धरण (Extract) करने एवं कार्बनडाईऑक्साइड के साथ संयोजन

करने की तकनीक का वर्णन किया गया है, जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका में वाणिज्यिक व्यवहार्यता (Commercial Viability) के निकट है।

भाग तीन में बाजार अर्थव्यवस्था को मित्रवत नहीं बताया गया है। अल्पाधिकारी वैश्विक अर्थव्यवस्था अपना कार्य उस तरह नहीं कर रही, जैसे करना चाहिए। यह मुद्दा लेखक इसलिए उठा रहे हैं कि जब इतनी सारी नवीकरणीय ऊर्जा तकनीकें व्यवहार्य या व्यवहार्यता के निकट हैं, फिर भी दुनिया इसके बारे में बहुत कम जानती है। दसवें अध्याय में लेखक अपने उठाए प्रश्नों का उत्तर खोज रहे हैं कि दुनिया कहाँ गलत हुई, इत्यादि। ग्यारहवाँ अध्याय में कोपेनहेगेन सम्मेलन की असफलता के बाद पर्यावरणविद् समुदाय की प्रतिक्रियाओं का वर्णन है।

समीक्षित पुस्तक के भाग चार में एक बेहतर दुनिया का द्वार बताने का प्रयास किया गया है। जीवाश्म ईंधन के बाद की दुनिया कैसे होगी, इस बात की चर्चा अध्याय बारह में की गई है। विश्व के दक्षिणी देश उत्तरी देशों की अपेक्षा ज़्यादा फ़ायदेमंद रहेंगे।सौर आधारित ऊर्जा स्थानांतरण से दक्षिण एवं उत्तर की आय में असमानताएँ कम हो जाएँगी। अध्याय तेरह में भारत को एक वैयक्तिक अध्ययन के रूप में लेकर विभिन्न पहलुओं का वर्णन प्रस्तुत किया गया है, जिसमें अक्टूबर 2016 में दिल्ली में सर्वाधिक स्मॉग (धूल-कोहरा) एवं विभिन्न नदियों के जल के बंटवारे को लेकर संघर्ष की चर्चा प्रस्तुत की गई है। दिल्ली को विश्व के आधा दर्जन दूषित शहरों में से एक बताया गया है।

अंतिम अध्याय में दो मुख्य मुद्दे उठाये गए हैं जो तेल और पानी से जुड़े हैं। क्योंकि, दोनों उत्तरोत्तर कम होते जा रहे हैं। तेल एवं गैस की जगह बायोमास के प्रयोग से पहला मुद्दा तथा पन बिजली की जगह सोलर पावर प्रयोग करने से दूसरा मुद्दा हल हो सकता है।

कुल मिलाकर पुस्तक में समस्या से संबंधित कारण, दुष्परिणाम एवं उनके उपायों के विस्तृत विवेचन को वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। विषय से संबंधित असीम क्षेत्रों और तथ्यों को इसमें समेटने की कोशिश की गई है। इसमें आने वाली पीढ़ियों को हम क्या देंगे, कैसा वातावरण देंगे आदि पर एक चिंता उभरकर सामने आती है, क्योंकि यदि हम अभी भी नहीं जागे तो शायद बहुत देर हो जायेगी एवं इसका उपाय केवल और केवल मानव के पास ही है। पुस्तक शोधकर्ताओं, विद्यार्थियों, पर्यावरणविदों और नीति-निर्माताओं के लिये अत्यन्त उपयोगी रहेगी।

अन्जू यादव
व्याख्याता, समाजशास्त्र
बाबू शोभाराम राजकीय कला महाविद्यालय
अलवर, राजस्थान
ईमेल: yadavanju6495@gmail.com

जेरेमी जे. श्मिट, *Water: Abundance, Scarcity and Security in the Age of Humanity*, नई दिल्ली: सेज पब्लिकेशंस, 2018, पृष्ठ 308, रू 995, आईएसबीएन 978-93-528-0039-1

DOI: 10.1177/2581654318787685

किसी भी वस्तु की आवश्यकता, उपलब्धता और कालांतर में उसकी कमी ही वस्तु विशेष के प्रबंधन को प्रेरित करती है। जलवायु परिवर्तन संबंधी विभिन्न वैश्विक चुनौतियों के मद्देनजर जेरेमी जे.